

भाव संवेदनाओं की गंगोत्री

मानवीय चेतना और सामाजिक परिवर्तन का वैज्ञानिक एवं आध्यात्मिक विश्लेषण



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

मूल समस्या: मानवीय संवेदनाओं का दुर्भिक्ष

भाव-शून्य समाज

बौद्धिकता का उन्माद

निष्ठुरता और क्रूरता

जीवित मनुष्य भी 'लाश' के समान

संवेदना-युक्त समाज

करुणा और ममत्व का विस्तार

जन-जन की पीड़ा का निवारण

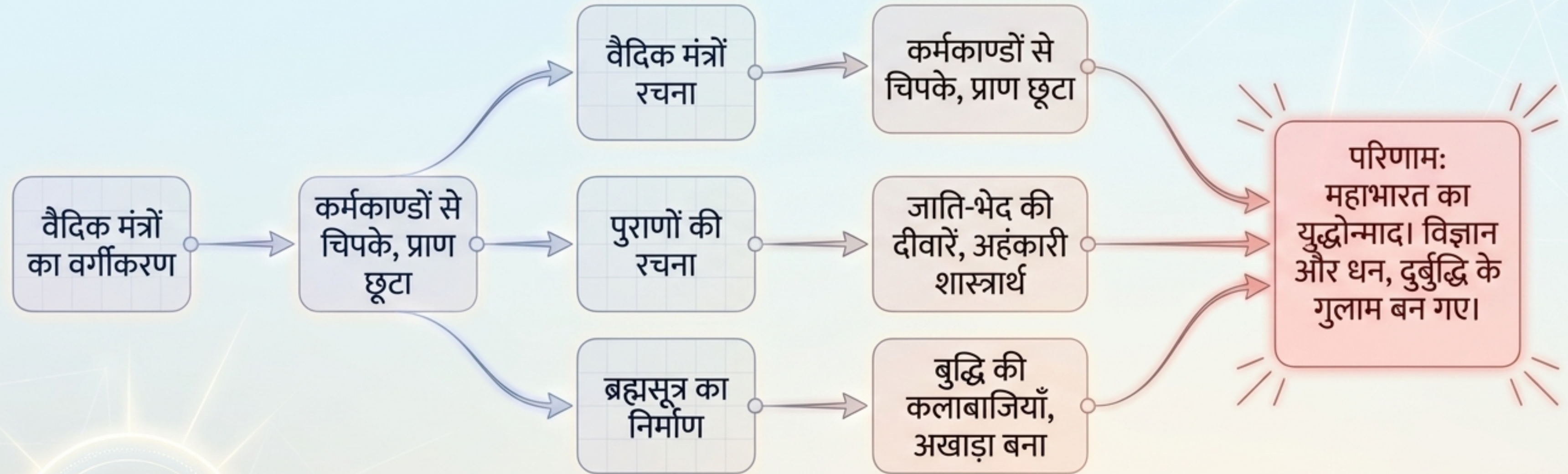
अवतारी चेतना का प्रवाह

जब भावना रूपी गंगोत्री सूख जाती है, तब समाज पतन की ओर जाता है।
अवतारी चेतना का एक ही कार्य है—इस प्रवाह के अवरोध (blockage) को हटाना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्या रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जब-जब के बीच में हो को मेरे कान्तिधर्मी साहित्य के रूप और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञानधर्म के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगगुरु विदमूर्ति तपोविष्ठ पंडित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

अध्याय १: वेदव्यास का विरोधाभास

केवल बौद्धिक परिमार्जन से समाज का निर्माण क्यों विफल हुआ?

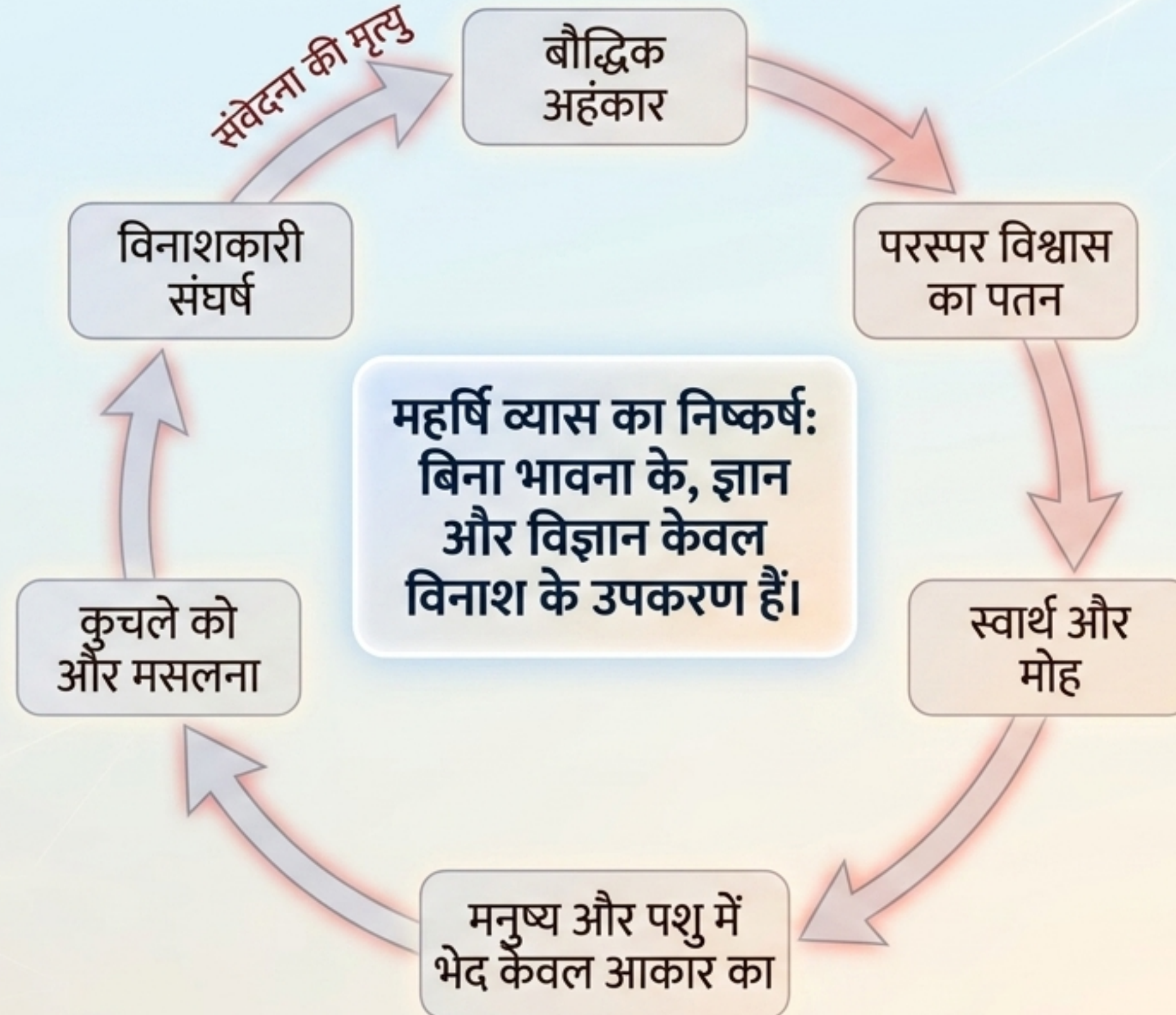


वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

संवेदना-हीन बुद्धिमत्ता की एन्ट्रॉपी



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया
माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर
का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही
चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब
बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे
क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

अध्याय २: देवर्षि नारद का हस्तक्षेप

मनुष्य के क्रियाकलापः
बुद्धि-मन-इंद्रियाँ
अहंकार के गुलाम



सघन भावों का जागरण

पुष्प जैसी कोमल सत्प्रवृत्तियाँ

वज्र जैसी कठोर
दुष्प्रवृत्ति-नाशक शक्ति

देवर्षि का निदान: "आपने विकृति को पहचाना, अब प्रकृति को पहचानिए।
मानव समूह का समाधान केवल भाव-संवेदनाओं का जागरण है।"

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

चेतना के जागरण की प्रणाली

संवेदनाएँ मानव मनोविज्ञान को कैसे बदलती हैं?

भाव जागरण

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

पहला प्रहार

अहंकार का छिन्न-भिन्न होना

नियंत्रण परिवर्तन

मन और बुद्धि का आत्मा का अनुगामी बनना

उन्नत कल्पनाएँ

हितकारक समाधान

मास्टर रणनीति: 'युग-धर्म' का निष्पादन

मूर्छित समाज को जगाने के लिए 'संजीवनी' का वितरण



नारद का आदेश: 'इस सुगन्धि को जन-जन के हृदयों तक पहुँचाएँ; इस कार्य को युग-धर्म मानकर चलें।'

अध्याय ३: चैतन्य महाप्रभु - बौद्धिक श्रेष्ठता का भ्रम

नवद्वीप के निमाई

- शास्त्र-तर्क मीमांसा में अजेय
- प्रशंसारों की चापलूसी
- अहंकार की चाकरी



सन्त ईश्वरपुरी की चुनौती

- “क्या आपकी व्याख्याएँ केवल बुद्धि-कौशल हैं, अथवा इनके साथ आपकी अनुभूतियाँ भी जुड़ी हैं?”
- “जब मनुष्य का आत्म-विश्वास खो गया है, तब केवल ‘वाक्-कौशल’ में व्यस्त रहना विडम्बना है।”

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

वसन्त पंचमी १९९० को
वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा
रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश
जन-जन के बीच में पहुँचना
ही चाहिए और आप सबसे
कहियेगा — सब बच्चों से
कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य
के रूप में जन-जन तक
पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव
युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

संवेदना की ऊष्मागतिकी

"लोहे को लोहा काटता है" - मनोवैज्ञानिक परिप्रेक्ष्य

दुर्बुद्धि



विशेषता: दाहक और तप्त।
सामाजिक स्थिति: मुर्दनी,
अकर्मण्यता, निहुरता।
दूसरों का विलाप नहीं सुनाई देता।

भाव-श्रद्धा



विशेषता: शीतल, परिमार्जित और
काम-लायक बनाने वाला।
सामाजिक स्थिति: समर्थ और सुन्दर।
पतन के निवारण के लिए दौड़ पड़ना।

संत का निदान: गरम (अहंकारी) लोहे को केवल ठण्डा
(करुणामय) लोहा ही काट और ढाल सकता है।

पुनर्जीवन प्रोटोकॉल

संवेदनाएँ कैसे द्रव्यमान-क्रिया में बदलती हैं?

उपेक्षित कोढ़ी
के दर्शन

मर्म स्पर्श

पीड़ा की अनुभूति –
निमाई अब 'मुर्दा' नहीं रहे

भौतिक क्रिया

घाव धोना और
औषधि लगाना

व्यापक विस्तार

संकीर्तन-मण्डलों का गठन –
एक जाग्रत चेतना ने अनेकों में प्राण-संचार किया

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से - “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा – सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

नियम: मनुष्य वही है, जो मनुष्य के लिए मरे।

अध्याय ४: मीरा बाई - संवेदनाओं की कैद और मुक्ति



वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान
शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगक्रुषि वेदमूर्ति
तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

चित्तौड़ की राजरानी

- वैभव, पद, अधिकार
- झूठी मर्यादाएँ और लोक प्रचलन
- आत्मा का गला घोटने वाला परिवार

"घायल की गति घायल जाने..."
- करुणा से भरा हृदय पेड़ की
सूखी डाल और मनुष्य की पीड़ा
में भेद नहीं कर सकता।

जनक्रान्ति का बीज

- करुणा का दबाव: अपनी आवश्यकताएँ
बिसरीं, दूसरों की याद आई
- महलों को ठुकराकर, अनेकों में
प्राण-संचार हेतु कूद पड़ी

नारी-चेतना का समाजशास्त्र

केसर बाई के साथ मीरा का संवाद



प्रतिरोध और लचीलापन

आध्यात्मिक अवज्ञा की भौतिकी

षड्यंत्रकारी प्रयास

- प्रथा-प्रचलनों का जाल
- साँप की पिटारी
- जहर का प्याला

दैवी चेतना का संरक्षण

- संकल्प: 'थारी मारी न मरूँ, मेरो राख्या हारा और'

सफलता का पैमाना

- बुझे जीवनो में नवज्योति का संचार।
- दर्द बाँटना और हर अन्तस् में कसक पैदा करना।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से –
“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा।
ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में
पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा –
सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर
को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में
जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
– पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ
पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य
(गायत्री परिवार के संस्थापक)

महा-संश्लेषण: अवतारी चेतना की सार्वभौमिक रूपरेखा

Guiding Star

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से — “मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”
— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

परिणाम (मीरा और निमाई): जाग्रत चेतना निष्पिष्य नहीं रह सकती—यह समाज की पीड़ा हरने के लिए विवश होकर कर्म करती है।

उत्प्रेरक (नारद): भाव-संवेदना ही वह एकमात्र अस्त्र है, जो अहंकार रूपी ‘गर्म लोहे’ को काट सकता है।

समस्या (व्यास और चैतन्य): संवेदना के बिना बुद्धि केवल क्रूरता और विनाश को जन्म देती है।



Side Panel Takeaway

जो जीवन भर केवल ईंट-पत्थर और कागज बटोरते हैं, वे प्रेत-तुल्य हैं। मानवता के लिए जीने वाला ही सच्चा मनुष्य है।

निष्कर्ष: आज का युग-धर्म और हमारा दायित्व

- संवेदनाओं का जागरण महाकाल का निश्चय है।
- आज की 'संजीवनी' है—सद्विचारों का प्रवाह।
- पुस्तक का अनुरोध: इस क्रान्तिधर्मी साहित्य को जन-जन तक पहुँचाएँ और सोई हुई चेतनाओं को झकझोरें।

वसन्त पंचमी १९९० को वन्दनीया माताजी से —

“मेरा ज्ञान शरीर ही जिन्दा रहेगा। ज्ञान शरीर का प्रकाश जन-जन के बीच में पहुँचना ही चाहिए और आप सबसे कहियेगा — सब बच्चों से कहियेगा कि मेरे ज्ञान शरीर को मेरे क्रान्तिधर्मी साहित्य के रूप में जन-जन तक पहुँचाने का प्रयास करें।”

— पूज्य गुरुदेव युगऋषि वेदमूर्ति तपोनिष्ठ पण्डित श्रीराम शर्मा आचार्य (गायत्री परिवार के संस्थापक)

